GOVT. BRENNEN COLLEGE CENTRAL LIBRARY THALASSERY

K20P 0255

Reg. No. : .....

Name : .....

II Semester M.A. Degree (CBSS – Reg./Suppl./Imp.) Examination, April 2020
(2014 Admission Onwards)
HINDI
HIN 2C 07 : Modern Hindi Poetry (upto Nayi Kavitha)

Time : 3 Hours Max. Marks : 80

I. किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें। **(5×1=5)**

1) सरस्वती पत्रिका।
2) मैथिलीशरण गुप्त।
3) कुकुरमुत्ता किसका प्रतीक है ?
4) नागार्जुन की चार रचनाएँ।
5) चार द्विवेदियुगीन साहित्यकार।
6) मुक्त छन्द का प्रणेता।
7) अज्ञेय की ज्ञानपीठ पुरस्कृत रचना।
8) 'क्रान्तिकारी कवि निराला' किसकी रचना है ?
9) प्रगतिवादी प्रवृत्तियाँ।

II. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (**150** शब्द) : **(3×5=15)**

10) कामायनी में व्यक्त प्रत्यभिज्ञा दर्शन।
11) 'कैदी और कोकिला' में अभिव्यक्त संवेदना।
12) 'जूठे पत्ते' कविता द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं ?
13) केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में परिस्थिति।
14) कवि मुक्तिबोध।

III. किन्हीं **तीन** प्रश्नों पर निबन्ध लिखिए। **(3×12=36)**

15) कविवर निराला की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
16) कामायनी में अभिव्यक्त समरसता पर विचार – विमर्श कीजिए।
17) समाज – सुधार में साहित्य की भूमिका व्यक्त कीजिए।
18) व्यक्त कीजिए कि सुमित्रानन्दन पन्त प्रकृति के चित्रकार हैं।
19) भारतेन्दु युगीन साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

IV. किन्हीं **चार** प्रश्नों की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए। (4×6=24)

20) अब पहुँची चपला बीच धार
छिप गया चाँदनी का कगार
दो बाहों से दूरस्थ – तीर, धारा का कृश कोमल शरीर
आलिंगन करने को अधीर।

21) तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद।
तरल आकाँक्षा से भरा–सा
आशा का आह्लाद।

22) गए तब से कितने युग बीत
हुए कितने दीपक निर्वाण।
नहीं पर मैंने पाया सीख
तुम्हारा सा मनमोहन गान।

23) टूटा वह तार ध्यान का, स्थिर मन हुआ विकल
सन्दिग्ध भाव की उठी दृष्टि, देखा अविकल
बैठे वे वहीं कोमल – लोचन, पर सजल नयन
व्याकुल – व्याकुल कुळ चिर प्रफुल्ल मुख निश्चेतन।

24) यह भुवन ही इन्द्र –कानन कर्म वीरों के लिए
कहते सदा तुम तो यहीं थे धन्य हूँ मैं हे प्रिये।
यह देव – दुर्लभ प्रेममय मुझको मिला प्रिय वर्ग है
मेरे लिए संसार ही नन्दन – विपिन है, स्वर्ग है।

25) दुनिया में सबने मुझी से रस चुराया
रस में मैं डूबा – उतराया
मुझी में गोते लगाए, वाल्मीकि – व्यास ने
मुझी से पोथे निकाले भास–कालिदासने।

26) तुम नृशंस से जगति पर चढ अनियन्त्रित
करते हो संसृति को उत्पीडन, पद – मर्दित
नगन, नगर कर, भग्न भवन प्रतिमाएँ खण्डित
हर लेते हों विभव, कला, कौशल चिर संचित।